

EXCLUSIVE

NEWS ANALYSIS BY

Mr. Shridhant Joshi



कौटिल्य एकेडमी

नई जिम्मेदारी: उर्जित के इस्तीफे के अगले दिन ही जेटली के खास रहे शक्तिकांत को केंद्रीय बैंक की कमान नोटबंदी का खाका खींचने वाले दास आरबीआइ प्रमुख

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

नई दिल्ली. उर्जित पटेल के इस्तीफे के बाद रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआइ) को उसका नया गवर्नर मिल गया है। 15वें वित्त आयोग के सदस्य शक्तिकांत दास को आरबीआइ का नया प्रमुख बनाया गया है। ब्याज दरों में कटौती समेत कई मुद्दों पर सरकार से चले आ रहे टकराव के बाद उर्जित ने सोमवार को इस्तीफा दे दिया था।

8 नवंबर 2016 में नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा नोटबंदी का फैसले लेने में शक्तिकांत दास की अहम भूमिका थी। सरकार की तरफ से लिए गए इस फैसले का मसौदा बनाने वालों में शक्तिकांत दास भी शामिल थे। शक्तिकांत दास का कार्यकाल तीन



दास ने देशों की रेटिंग बताने वाली वैश्विक एजेंसियों के तरीकों की निंदा की थी

साल का होगा। दास मई 2017 तक वित्त मामलों के सचिव रहे थे।

दिल्ली के सेंट स्टीफन कॉलेज से मास्टर्स डिग्री लेने वाले शक्तिकांत दास ने करीब 38 साल के कैरियर में वित्त मंत्रालय और व्यय विभाग के संयुक्त सचिव, तमिलनाडु सरकार के विशेष आयुक्त और राजस्व आयुक्त, उद्योग विभाग के सचिव के साथ-

साथ कई अहम पदों पर काम किया है। 26 फरवरी 1957 को ओडिशा में जन्मे दास ने 2008 से केंद्र सरकार के लिए काम किया। दास को वित्त मंत्री अरुण जेटली का खास बताया जाता है।

जेटली ने कई बार सार्वजनिक तौर पर दास के प्रशासनिक कार्यकौशल की तारीफ भी की।

जी-20 में निभाई थी अहम भूमिका

तमिलनाडु केंद्र के 1980 बैंच के आइएएस दास ने जी-20 में भारत की ओर से अहम भूमिका निभाई थी। नोटबंदी के आदेश के बाद छोटे-बड़े ऐलान को लेकर दास मीडिया से मुखतिब होते रहे थे।

एक रुपए के नोट पर दास के दस्तखत

मई 2017 में सरकार ने एक रुपए का नया नोट छापने का ऐलान किया था। यह नोट भारत सरकार की तरफ से जारी होना था और इस पर तब वित्त सचिव रहे शक्तिकांत दास के हस्ताक्षर हुए।

इधर, अर्थशास्त्री भल्ला का इस्तीफा



नई दिल्ली. जाने माने अर्थशास्त्री और स्तंभकार सुरजीत भल्ला ने मंगलवार को प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार परिषद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने ट्वीट कर बताया यह इस्तीफा उन्होंने एक दिसंबर को ही दे दिया था। वे परिषद में अल्पकालिक सदस्य थे। भल्ला ने अपने इस्तीफे की वजह नहीं बताई है।

नासा का इंटरस्टेलर: सौर मंडल से बाहर दूसरा मानव निर्मित अंतरिक्ष यान

बाहरी ग्रहों को खोजने सौर मंडल से बाहर निकला वॉयजर-2

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

वाशिंगटन. इंटरस्टेलर उपग्रह वॉयजर-2 सफलतापूर्वक सौर मंडल से बाहर निकल गया है। ऐसा करने वाला वह दूसरा मानव निर्मित अंतरिक्ष यान है। छह साल पहले वॉयजर-1 ऐसा कर चुका है।

अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने सोमवार को बताया था कि उसका अंतरिक्ष यान सूर्य के पास के संरक्षक बुलबुले से अलग हटकर तारों के बीच की जगह से गुजर रहा है। मिशन का नेतृत्व कर रहे प्रो. स्टोन के अनुसार, शुरुआत में हमारी टीम को नहीं पता था कि यह सूर्य के सुरक्षात्मक बुलबुले तक पहुंचने में कितना समय लेगा। यह इसकी 41 वर्ष की यात्रा में रोमांचकारी समय है।



सबसे लंबा अभियान

वॉयजर-1 और 2 मानव रहित यान हैं, जिन्हें हमारे सौर मंडल और उसके बाहर की खोज के लिए प्रक्षेपित किया गया है। ये सौर मंडल के बाहर के ग्रहों का पता लगाएंगे। वॉयजर-2

नासा का सबसे लंबा अभियान है। इस यान ने बृहस्पति, शनि, वरुण ग्रहों की यात्रा पूरी कर ली है। साथ ही यह इन ग्रहों के चंद्रमा की तस्वीरें भेजने वाला पहला शोध यान भी है।

वॉयजर-2 सूर्य के पास के संरक्षक बुलबुले से अलग हटकर तारों के बीच की जगह से गुजर रहा है।

वॉयजर-2 को 41 साल पहले छोड़ा गया था

18 अरब किलोमीटर दूर है अब पृथ्वी से
54 हजार किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से बढ़ रहा आगे

वॉयजर-1

22 अरब किलोमीटर धरती से दूर है वॉयजर-1
61 हजार किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार

कांग्रेस की जीत के तीन बड़े कारण

गांवों में कर्ज माफी का वादा कर कांग्रेस ने 30 सीटें बढ़ाई तो शहरों में बेरोजगारी का मुद्दा उठाकर 33 सीटें बढ़ा लीं भाजपा को शहरों में बड़ा नुकसान, कांग्रेस को मालवा-निमाड़ ने दी संजीवनी

1 6 क्षेत्र. भाजपा को 38 सीटों का नुकसान सिर्फ दो जोन से

जोन	कुल सीटें	भाजपा		कांग्रेस	
		सीटें	बढ़ी/घटी	सीटें	बढ़ी/घटी
मालवा निमाड़	66	28	(-28)	35	(+24)
महाकौशल	38	13	(-11)	24	(+11)
मध्यभारत	36	23	(-6)	13	(+7)
ग्वा.-चंबल	34	22	(-2)	11	(+1)
विंध्य	30	24	(+8)	06	(-6)
बुंदेलखंड	26	14	(-6)	10	(+4)

सायने... निमाड़ में कांग्रेस फिर मजबूत हुई

- मालवा-निमाड़ में भाजपा को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है और इन्हीं अंचल की सीटों ने कांग्रेस को संजीवनी दी। खंडवा समेत निमाड़ के चार आदिवासी जिलों खरगोन, बड़वानी, धार और झाबुआ में कांग्रेस की ताकत बढ़ गई है।
- निमाड़ की कुल 28 सीटों में कांग्रेस ने 20 सीटों पर जीत हासिल की। दो सीट पर निर्दलीयों ने बाजी मारी। यह दोनों कांग्रेस के ही बागी उम्मीदवार थे। भाजपा को केवल 6 सीट पर ही जीत मिली। यानी यह गढ़ भी ढह गया।

2 गांव-शहर. 5 साल भाजपा ने खोई 61 सीटें, कांग्रेस को फायदा

शहरी सीटें 104	12 फीसदी वोट घटा भाजपा का		बढ़ी या घटी
	2018	2013	
	सीटें (वोट %)	सीटें (वोट %)	सीटें (वोट %)
भाजपा	51 (38%)	82 (45%)	-31 (45%)
कांग्रेस	52 (41%)	19 (34%)	+33 (38%)
अन्य	01 (10%)	03 (9%)	-2 (3%)

ग्रामीण सीटें 126 4 फीसदी वोट बढ़कर कांग्रेस को मिला

	2018		2013		बढ़ी या घटी
	सीटें (वोट %)	सीटें (वोट %)	सीटें (वोट %)	सीटें (वोट %)	
भाजपा	57 (40%)	87 (45%)	-30 (35%)		
कांग्रेस	68 (41%)	38 (37%)	+30 (40%)		
अन्य	01 (3%)	01 (4%)	+0 (0%)		

सायने... लोकसभा चुनाव में 18 सीटें हो सकती है कम

- इन परिणामों को देखे तो भाजपा को 18 लोकसभा सीटों पर बड़ा नुकसान होने की संभावना है। कांग्रेस को फायदा।

3 न्यू ट्रेंड. नोटा ने 18 से ज्यादा सीटों पर चौकाया

सीट	कौन हारा	अंतर	नोटा
बुरहानपुर	अर्चना चिटनौस (भाजपा)	5120	5726
जबलपुर 3.	शरद जैन(भाजपा)	578	1209
पेटलावद	निर्मला भूरिया(भाजपा)	5000	5148
जावरा	केके सिंह कालूखेड़ा(कांग्रेस)	511	1510
इंदौर-5	सत्यनारायण पटेल(कांग्रेस)	1133	2786
राजपुर-	अंतरसिंह पटेल(भाजपा)	932	3358
टिमरनी	अभिजीत शाह(कांग्रेस)	2213	4084
सुवासरा	राधेश्याम पाटीदार(भाजपा)	350	2976
गरोठ	सुभाष सोजतिया(कांग्रेस)	2108	2474

सायने... नोटा की ताकत इस बार नए रूप में

- पिछले चुनाव में ऐसे 5 बड़े नेता थे, जिनकी हार-जीत के अंतर से नोटा वोट ज्यादा था। इस बार यह आंकड़ा बढ़कर नौ नेताओं पर पहुंच गया। यानी बड़े नामों को हराने के लिए नोटा का उपयोग बढ़ रहा है।
- 2013 में 651510 वोट नोटा के थे। यानी कुल वोट का 1.90 प्रतिशत। इसने 230 में 56 सीटों पर प्रभाव डाला था। 18 सीटों पर जीत-हार के अंतर से ज्यादा नोटा था।

इलेक्शन अपडेट

■ कांग्रेस ने सरकार बनाने के लिए राज्यपाल को पत्र लिख मिलने का समय मांगा

रात डेढ़ बजे पीसीसी में कमलनाथ, सिंधिया, दिग्विजय डटे रहे, उधर सीएम हाउस में शिवराज पार्टी पदाधिकारियों संग मंथन करते रहे

■ कांग्रेस विधायक दल की बैठक पीसीसी में आज शाम 4 बजे

■ एके एंटनी केन्द्रीय पर्यवेक्षक के रूप में मौजूद रहकर विधायकों व नेताओं की राय जानेंगे

■ 37000 ज्यादा वोट (0.1%) लेकर भी भाजपा सीटों के आंकड़े में कांग्रेस से पिछड़ी

31 में से 13 मंत्री हारे .

■ जयंत मलैया, उमाशंकर गुप्ता, दीपक जोशी, जयभान पवैया, रुस्तम सिंह, लालसिंह आर्य, अंतर सिंह आर्य, ओमप्रकाश धुर्वे, अर्चना चिटनीस, नारायण कुशवाह, बालकृष्ण पाटीदार, शरद जैन, ललिता यादव।

(2013 में 10 मंत्री हारे थे)

■ बागियों ने भाजपा को भिंड, दमोह, बमोरी, पथरिया, महेश्वर में और कांग्रेस को झाबुआ, महिदपुर में नुकसान पहुंचाया

एक साल पहले 11 दिसंबर को ही राहुल बने कांग्रेस अध्यक्ष, ठीक उसी तारीख को मिला जीत का तोहफा

राजस्थान में कांग्रेस राज, रमन बेदखल, मध्यप्रदेश में त्रिशंकु

छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सबसे बड़ी जीत, मप्र में बसपा-अन्य के समर्थन से बनेगी कांग्रेस सरकार



राजस्थान

दोनों दलों में 1.78 लाख वोटों का फर्क

राजस्थान में कांग्रेस और भाजपा के बीच लगभग 1.78 लाख वोटों का अंतर रहा, जबकि पूरे प्रदेश में 4.68 लाख वोट नोटा को मिले।

5 राज्यों में करीब 15.15 लाख वोट नोटा को मिले। मप्र में सबसे ज्यादा 5.38 लाख वोट नोटा में गए।

प्रतिशत में कांग्रेस को सबसे ज्यादा छत्तीसगढ़ में वोट मिले, लगभग 43.2 प्रतिशत।

मप्र में वोट शेयर 0.1 % ज्यादा होने पर भी भाजपा को कम सीट मिलीं

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

भोपाल. रायपुर. जयपुर. जीत को तरसती रही कांग्रेस ने एक ही झटके में भाजपा के तीन गढ़ झटक लिए। सबसे बड़ी जीत उन्हें छत्तीसगढ़ में मिली जहां जनता ने 15 साल से जमी रमन सिंह सरकार को उखाड़ फेंका। साथ ही कांग्रेस ने राजस्थान में भाजपा सरकार को विदा कर दिया। भाजपा के तीसरे गढ़ मध्यप्रदेश में शिवराज सिंह ने कड़ी टक्कर दी। दिन भर आगे-पीछे के बाद आखिर कांग्रेस ही सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। इस चुनाव से राहुल के नेतृत्व को ताकत मिली है. राजस्थान और मध्य

प्रदेश में कांग्रेस और भाजपा के वोट प्रतिशत में अंतर एक फीसदी से भी कम रहा। हालांकि 2009 के आम चुनाव में मिली जीत बाद कांग्रेस की यह सबसे बड़ी चुनावी जीत है। राजस्थान और मध्य प्रदेश में नोटा के वोट भाजपा और कांग्रेस के वोट अंतर से अधिक रहे। मप्र में कांग्रेस बसपा के 2 एवं 5 अन्य की मदद से सरकार बनाती दिख रही है। वहीं दूर दक्षिण में केसीआर की तेलंगाना राष्ट्रीय समिति (टीआरएस) ने लगातार दूसरी बार बहुमत के पार बड़ी जीत हासिल की। पांचवें राज्य मिजोरम में मिजो नेशनल फ्रंट ने कांग्रेस को उखाड़ फेंका।

लोकतंत्र में अब भी लोक की भूमिका शून्य नहीं



योगेंद्र
यादव
राजनीतिक
विश्लेषक

परिणाम ने गठबंधन के मिथक को भी तोड़ा है। कागज पर तो तेलंगाना में कांग्रेस का गठबंधन टीआरएस पर भारी था, लेकिन उस अवसरवादी गठबंधन में न विश्वसनीयता थी, न चेहरा और न ही संकल्प। मतलब कि आम चुनाव में सिर्फ महागठबंधन बना लेने से काम नहीं चलेगा।

अहंकार और आलस्य दोनों हरे। जनता ने सत्ताधारियों को हराया और विपक्ष को डराया। कांग्रेस जीती नहीं है। लोकतंत्र में तंत्र के शिकार लोक ने विरोध तो जताया लेकिन विकल्प नहीं पाया।

2019 के लोकसभा चुनाव का तथाकथित सेमीफाइनल पूरा हो ही गया। प्रतिद्वंद्वियों को सबक मिल गया। जो चुनाव कल तक बीजेपी की जेब में दिख रहा था, वह अचानक खुला खेल बन गया। लोकतंत्र में तंत्र पर लोक की आवाज दर्ज करने का रास्ता फिर खुल गया।

तय हो गया कि आम चुनाव हिंदू-मुसलमान के मुद्दे पर नहीं, किसान-नौजवान के मुद्दे पर होगा। मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में बीजेपी के सिंहासन को हिलाने का काम ग्रामीण वोट ने किया है। जनता के लिए इस बार सबसे बड़ा मुद्दा रोजगार और खेती-किसानी का संकट था। उधर, योगी आदित्यनाथ के तमाम प्रचार के बावजूद मंदिर का मुद्दा नहीं चला। अब आने वाले महीनों में सरकार को किसान और नौजवान के लिए कुछ योजना लागू करनी होगी, विपक्ष को भी उनके लिए कुछ कार्यक्रम देना होगा।

परिणामों से यह साबित हो गया

कि बीजेपी सिर्फ पैसे और मीडिया के सहारे लोकसभा चुनाव नहीं जीत सकती, और यह भी कि हमारे लोकतंत्र में लोक की भूमिका अब भी शून्य नहीं हुई है। अगर चुनाव जीतना है तो आज भी जनता के सुख-दुख से रिश्ता बनाना जरूरी है।

इन चुनावी परिणामों से व्यक्ति पूजा की राजनीति पर भी अंकुश लगेगा। हिंदी पट्टी के तीनों राज्यों में कांग्रेस को सबसे बड़ी सफलता वहां मिली, जहां उसके पास एक भी कद्दावर नेता नहीं था। उधर, बीजेपी के लिए नरेंद्र मोदी का जादू इस बार नहीं चला। तमाम सर्वेक्षण बताते हैं कि राहुल गांधी और खुद अपनी पार्टी की तुलना में प्रधानमंत्री अब भी ज्यादा लोकप्रिय हैं। लेकिन अब उन्हें अपनी सरकार का हिसाब देना होगा, हर सवाल का जवाब देना होगा। अगले कुछ महीने कई मुश्किल सवाल प्रधानमंत्री के सामने मुंह बाए खड़े हैं—नोटबंदी, बेरोजगारी, जीएसटी और किसानों की बदहाली से लेकर रफाल तक। इन चुनावों ने कांग्रेस समेत पूरे विपक्ष के आलस्य को तोड़ा है, उसे वक्त रहते चेताया है। महारानी की अहंकारी, भ्रष्ट और निकम्मी सरकार को भी बड़े बहुमत से ना हरा पाना कांग्रेस की नाकामी

का सबूत है। राजस्थान में पहले भी 1998 में विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को बहुमत देने के बाद वोटर 1999 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी की तरफ खिसक चुका है। मगर कांग्रेस को छत्तीसगढ़ कांग्रेस की सफलता से सबक लेना चाहिए। अगर जनता का विश्वास जीतना है तो उनके बीच रहना होगा, संघर्ष करना होगा। राजस्थान और मप्र में कांग्रेस को यह जीत नाम के वास्ते ही है।

इस चुनाव परिणाम ने गठबंधन के मिथक को भी तोड़ा है। कागज पर तो तेलंगाना में कांग्रेस का गठबंधन हर तरह से टीआरएस पर भारी था, लेकिन उस अवसरवादी गठबंधन में न तो विश्वसनीयता थी, न कोई चेहरा और न ही संकल्प। मतलब कि आम चुनाव में सिर्फ महागठबंधन बना लेने से काम नहीं चलेगा। चुनाव में जरूरी है जनता के सामने एक सपना रखना, एक आस जगाना। इन परिणामों ने आगामी लोकसभा चुनाव को ज्यादा संतुलित कर दिया है। कहा जा सकता है कि तीनों राज्यों की 65 में से जीती हुई 62 सीटों में से कम से कम आधी भाजपा को गंवानी पड़ेगी। जनता तो मुंह खोलकर बोल रही है लेकिन पार्टियां कान खोलकर सुनने को तैयार नहीं हैं।

80 देशों के बच्चों के बीच वर्ल्ड चैम्पियन रहा एमपी का स्टूडेंट



सिटी रिपोर्टर | इंदौर
हर साल ये इंटरनेशनल कॉम्पीटिशन अलग-अलग देश में कराई जाती है और दुनिया भर के ब्रिलिएंट माइंड्स इसमें हिस्सा लेते हैं। इस बार मलेशिया में इसका 23वां सीजन था। यूसीमास लिसनिंग कॉम्पीटिशन 2019 में एमपी के रुद्र गुप्ता ने लिसनिंग चैम्पियन ट्रॉफी जीती। दुनिया के 80 देशों से 2750 बच्चों का सिलेक्शन इस कॉम्पीटिशन के लिए किया गया था। एमपी से 24 बच्चों ने हिस्सा लिया। अगस्त में अहमदाबाद में हुई कॉम्पीटिशन में इनका सिलेक्शन इस कॉम्पीटिशन के लिए हुआ था। ये सभी पिछले दो महीनों से प्रैक्टिस कर रहे थे।
इंदौर से ये भी रहे चैम्पियन :
चिन्मय पाटिल, अग्रिम जैन
ये रहे फर्स्ट रनरअप : आर्यन झा, अभिज्ञान झा, प्रियांशी कंवर और निपुण ऐरन।

Hindi Belt Reverse

*BJP governments are overthrown,
Congress makes big advances*

The Hindi heartland is BJP's stronghold, and its assembly election reverses in the heartland states of Madhya Pradesh, Rajasthan and Chhattisgarh should cause Congressmen to rejoice – even as it sends out the message that winds of change are sweeping the country. Yesterday's reverse, where BJP's total MLA strength in the three states dropped from 377 to around 200, could well translate into a similar slide in next year's Lok Sabha tally. In addition BJP has much to lose in Hindi heartland biggie Uttar Pradesh, where it won 71 out of 80 Lok Sabha seats in 2014. Recent Lok Sabha bypoll defeats as well as chief minister Yogi Adityanath's misgovernance in the state – BJP lost bypolls even in Adityanath's home constituency of Gorakhpur – suggest BJP is unlikely to repeat its 2014 performance in the crucial state of UP as well.



For BJP, the takeaway from these elections should be that while it may have mastered the art of political communication and its ground game is still the best, these will not suffice to win elections into the foreseeable future. Performance is a critical factor, whose place cannot be taken by hype or eloquent oratory. Anti-incumbency doesn't arise out of nowhere, it has its origin in declining standards of governance. Once the wind of anti-

incumbency had propelled BJP forward, enabling it to win state after state after thrashing Congress at the Lok Sabha hustings in 2014. Four and a half years later, dissing Congress will not get BJP very far; rather BJP has run into headwinds of anti-incumbency itself.

It's the underlying causes of voter disaffection, like shortfall in job growth and farm incomes, that are crying for attention. There has to be greater focus on addressing fundamental issues affecting people, including underlying economic and livelihood problems as well as the need to preserve social harmony.

On Congress's part, there is no room for complacency either in the run-up to 2019. Its current victories have been achieved in essentially bipolar states where BJP is the main antagonist. Elsewhere it will have to deal with strong regional players as well. Its only hope for taking on BJP nationally is to form a strong mahagathbandhan, for which it will need to demonstrate flexibility, accommodation and sharpness. Neither can it confine itself to attacking Prime Minister Narendra Modi; it will also need to forge a convincing alternative narrative of what it stands for.

Alarm Bells For BJP

Congress takes big strides, Modi magic waning but still formidable for 2019 polls

Nalin Mehta



In an election bookended by Prime Minister Narendra Modi's Congress "ki kaun si vidhwaha!" jibe on the one hand and Rahul

Gandhi's "chaukidar chor hai" slogan on the other, there are larger portents for the 2019 general election. Though BJP's regional satraps fronted its campaign and local issues were in the forefront, the fact that it currently holds 62 of 65 Lok Sabha seats in Madhya Pradesh, Rajasthan and Chhattisgarh, means that the results are an indicator of which way the political winds are blowing.

The thrilling cliffhanger in MP notwithstanding, a few clear trends are emerging. First, like in Gujarat's Saurashtra a year ago, Congress is on the upswing in rural India. In MP, Congress improved its tally from 56 rural seats in 2013 to 95 in 2018 while BJP went down from 122 to 82. In Rajasthan, Congress more than quadrupled from 18 to 83 rural seats while BJP collapsed from 131 to 57, and in Chhattisgarh it grew from 35 to 56 seats while BJP went down from 41 to 16.

It is important to stress that BJP has not been wiped out from rural areas, except in Chhattisgarh. It retains a strong rural presence but the direction of change is clear. In that sense, Rahul Gandhi's messaging on agrarian distress and youth unemployment seems to have struck a chord as a template for the wider national poll battle ahead. All three BJP chief ministers followed similar welfare state models with a great number of schemes. These helped stem the tide only in MP, where Shivraj Singh Chouhan was more efficient in delivery.

Second, Congress is once again making inroads into the erstwhile impregnable BJP wall of saffron in urban areas and with the middle classes. In urban seats, Congress drew level with BJP in Rajasthan, made sharp inroads in MP and swept urban Chhattisgarh. This urban advance signals that a core constituency, including traders,



that drove BJP to power in 2014 is now splintered down the middle.

BJP won a famous victory in Uttar Pradesh soon after demonetisation, couched at the time as a class war. But the cumulative labour pains over GST and lack of tangible benefits from demonetisation are now coming home to roost. In MP Congress went from 2 to 17 seats in urban areas, with BJP declining from 44 to 29. In Rajasthan Congress upped its tally from 3 to 17 seats, while BJP fell from 32 to 17. Urban Chhattisgarh, of course, saw a complete BJP rout, including in the capital Raipur.

Third, though Yogi Adityanath tried to reach out to Dalits on the campaign trail with his controversial remark that Ramayana's Hanuman was a Dalit, there is a clear shift in SC seats across the Hindi heartland. Overall, BJP has gone from holding as many as 68 of the total 78 SC-reserved seats in the three Hindi states to just 32 SC seats. Conversely, Congress has gone up to 41 SC seats from just 5 in 2013.

This round of elections can be seen as the making of Rahul Gandhi. Long decried as a reluctant politician, he clearly took on the bulk of the grunt work in the campaign

This is a clear indicator that an important and numerically powerful social group is getting polarised and gravitating to other political parties. By not going with BSP, Congress took a risk but it's a gamble that seems to be paying off.

Fourth, this round of elections can be seen as the making of Rahul Gandhi. Long decried as a reluctant politician, he clearly took on the bulk of the grunt work in the campaign. He did not budge on the demand for projecting CM faces, held 21 rallies in MP to Modi's 11, 13 in Chhattisgarh to Modi's 5, 8 in Telangana to Modi's 3, and 15 in

Rajasthan to Modi's 13. His strike rate in areas he campaigned in was much better.

Rahul would certainly have been assigned the lion's share of blame if Congress didn't win in the Hindi heartland. It is only natural that he should be given the credit for these victories.

Fifth, Rahul was decried by both BJP as a "chunaavi Hindu" and by liberals who saw his temple hopping during the campaign as a cultural surrender to the right. Voters on the ground clearly did not see his Hindu turn as a problem. In fact, as we heard constantly on the campaign trail, it helped beat the BJP charge of Congress being 'anti-Hindu', removing the reluctance of many to switch sides. The 'soft Hindutva' debate excites drawing rooms in Lutyens' Delhi but visiting temples may be smart poll strategy on the ground.

What next? The fact that we saw such close battles in Hindi heartland states despite years of incumbency by BJP means that it remains a formidable force. Its cadre and ground game remain fighting fit. Modi did not front these state polls as much as he did for the campaigns in Karnataka - where his late surge took BJP over the line as the single largest party - and in Gujarat, which was fought almost entirely on his persona. He remains the country's pre-eminent vote catcher. But the sheen may be wearing off after close to five years in power.

We should be careful in extrapolating state election victories to direct Lok Sabha triumphs - especially when vote-share differences are so narrow in MP and Rajasthan. In 2008, BJP won MP and Chhattisgarh but went on to lose the Lok Sabha polls in these states. These polls may not predict the number of Lok Sabha seats each party will eventually get but they do set the wider political tone and atmosphere. Congress wins in north India give it more heft as the fulcrum of an anti-BJP alliance even as KCR's huge victory in Telangana opens up additional coalition possibilities. Either way, it will be arithmetic versus personality politics in 2019.

'Chafe are lead...